INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
(Peer Reviewed -Referred -Open Access Journal)
ISSN: 2945-3127
Vol. July 2024, Issue -1
Impact Factor: 4.12

मध्यकालीन भारतीय संगीत का संदर्भ: एक अध्ययन

सुजाता मजूमदार, शोधार्थी, संगीत विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत।

डॉ. रूपा सिन्हा, सह-प्राध्यापक, संगीत विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत।

DOI: https://doi.org/10.56815/IRJAHS/2024.V(2024)I1.43-45

सार:

मध्यकालीन शासन के दौरान कला, साहित्य और संगीत के क्षेत्र में उन्नति की अपनी समृद्ध विरासत के माध्यम से भारत की महानता यूरोपीय महाद्वीप तक फैली हुई थी। भारतीय संगीत की भी स्थिति संस्कृत से इस्लामी भाषा में परिवर्तन के कारण निर्धारित हुई। गीत गोविंद, संगीत रत्नाकर, राग तरंगिनी और कई अन्य महान रचनाएँ इसी काल में लिखी गईं।आमेर खुसरो ने नए वाद्य यंत्रों, रागों और गीतों (गीता प्रकार) का आविष्कार किया।अकबर के काल को हिंदुस्तानी संगीत का स्वर्ण युग माना जाता है। भक्ति संस्कृति ने भजनों के माध्यम से घर-घर जाकर संगीत को लोकप्रिय बनाया और प्रचारित किया। 19वीं शताब्दी के अंत में विष्णु नारायण भातखंडे और विष्णु दिगंबर ने अपनी संस्था के माध्यम से संगीत को एक नया जीवन प्रदान किया।उन्होंने अपने अथक प्रयासों से संगीत कला को प्रज्वलित किया और एक नए युग का निर्माण किया। मध्यकाल के दौरान, भारतीय संगीत उत्तर में हिंदुस्तानी संगीत में विभाजित हो गया, जो फ़ारसी और इस्लामी परंपराओं से प्रभावित था, और दक्षिण में कर्नाटक संगीत, जिसने अधिक स्वदेशी द्रविड़ शैली को बरकरार रखा। प्रमुख विकासों में अमीर खुसरो द्वारा सितार और तबला जैसे नए वाद्ययंत्रों की शुरुआत, ख्याल और धार्मिक ध्रुपद जैसी गायन शैलियों का विकास और शास्त्रीय रचनाओं में संस्कृत से स्थानीय भाषाओं की ओर बदलाव शामिल थे, विशेष रूप से अकबर और राजा मानसिंह तोमर जैसे शासकों के शासनकाल के दौरान।

की-शब्द-
मध्यकालीन काल, हिंदुस्तानी संगीत, सांस्कृतिक आदान-प्रदान।

1. प्रस्तावना –

मध्यकाल में भारत में संगीत की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भूमिका रही। आनंद का साधन प्रदान करने के अलावा, संगीत का सामाजिक संबंधों, धार्मिक समारोहों और रचनात्मक अभिव्यक्ति पर भी प्रभाव पड़ा। भक्ति और सूफी आंदोलनों, क्षेत्रीय परिवर्तनशीलता और साम्राज्यों के विकास के माध्यम से, भारत की संगीत विरासत का निर्माण इस समय में हुआ, जो सातवीं से अठारहवीं शताब्दी तक फैला हुआ है। दक्कन सल्तनत, राजपूत राज्य, मुगल साम्राज्य और दिल्ली सल्तनत ने शाही समर्थन प्रदान किया, जिससे संगीत परंपराओं का दुनिया भर में प्रसार संभव हुआ। इस बीच, दक्षिण भारत के मंदिरों ने कर्नाटक संगीत के प्रति अपना अटूट समर्थन दिखाया है। भक्ति और सूफी दोनों परंपराओं ने आध्यात्मिक प्रेम, व्यक्तिगत भक्ति और सामाजिक समावेश के महत्व पर ध्यान केंद्रित करके संगीत के लोकतंत्रीकरण में एक साथ योगदान दिया। तुलसीदास, मीरा बाई, कबीर और अमीर खुसरो जैसे कई मनीषियों और संतों ने लोगों के बीच शांति स्थापित करने के लिए स्थानीय काव्य का प्रयोग किया। ऐसा उनके समय में प्रचलित कठोर सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने के लिए किया गया था। ग़ज़ल, कीर्तन, भजन और कव्वाली भक्ति संगीत के ऐसे प्रकार हैं जो समय के साथ आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में विकसित हुए हैं। सामुदायिक शांति को बढ़ावा देने के अलावा, रहस्यवाद पर आधारित इन संगीत रूपों ने समय के साथ भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया है। मध्यकालीन भारत में मौजूद विविध सांस्कृतिक परिवेश के संदर्भ में, इस शोधपत्र का उद्देश्य इस बात पर प्रकाश डालना है कि किस प्रकार संगीत के जटिल बोल और धुन एक एकीकृत कारक के रूप में कार्य करते थे। मध्यकालीन भारत में संगीत केवल मनोरंजन का एक साधन नहीं था; यह एक गहन सांस्कृतिक शक्ति थी जो जीवन के हर पहलू – आध्यात्मिक, सामाजिक और कलात्मक – में व्याप्त थी। मध्यकाल में क्षेत्रीय विविधता, धार्मिक आंदोलनों और दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य सहित विभिन्न राजवंशों के प्रभाव से आकार लेती संगीत परंपराओं का एक गतिशील विकास हुआ।सूफी रहस्यवाद ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, संगीत को दिव्य संवाद और आध्यात्मिक परमानंद के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया, जो अभिजात वर्ग और आम लोगों दोनों के लिए सुलभ था (शिमेल, 1975)। भक्ति और सूफी आंदोलन भी समान रूप से परिवर्तनकारी हैं, जिन्होंने संगीत को लोकतांत्रिक बनाया और इसे भक्ति और सामाजिक सुधार के एक उपकरण के रूप में नियोजित किया (हॉले और जुएर्गेन्समेयर, 2004; नारायणन, 1994)। तुलसीदास, मीराबाई, कबीर और पुरंदरदास जैसे संत-कवियों ने जनता से जुड़ने और कठोर सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने के लिए सरल लेकिन गहन गीतों का इस्तेमाल किया। मध्यकालीन भारत में संगीत का मंदिर अनुष्ठानों, राज दरबारों, त्योहारों और यक्षगान जैसी नाट्य परंपराओं से भी गहरा संबंध था (सुब्रमण्यन, 2006)। शारंगदेव द्वारा रचित संगीत रत्नाकर जैसे संगीत ग्रंथों ने सैद्धांतिक आधारशिलाएँ रखीं, जबकि मौखिक परंपराओं ने पीढ़ियों के बीच ज्ञान का संचरण सुनिश्चित किया (रोवेल, 1992)। संक्षेप में, मध्यकालीन भारतीय संगीत एक जीवंत और विकसित होती हुई ताना-बाना था, जो इस क्षेत्र के बहुलवादी लोकाचार को दर्शाता था।

2. साहित्य समीक्षा –

मध्यकालीन भारत में संगीत का अध्ययन एक जीवंत अंतविषय क्षेत्र में व्याप्त है जो इतिहास, धार्मिक अध्ययन, सांस्कृतिक नृविज्ञान और संगीतशास्त्र को एक दूसरे से जोड़ता है। विद्वानों ने लंबे समय से यह स्वीकार किया है कि संगीत कलात्मक अभिव्यक्ति से आगे बढ़कर आध्यात्मिक, राजनीतिक और सामाजिक संवाद का माध्यम भी है (वेड, 1998; फैरेल, 1997)। इसके अलावा, इतिहासकार कैथरीन स्कोफ़ील्ड इस बात पर ज़ोर देती हैं कि कैसे अकबर और शाहजहाँ जैसे सम्राटों के अधीन शाही संरक्षण ने ख़याल और ध्रुपद जैसे परिष्कृत संगीत रूपों के उद्भव को उत्प्रेरित किया (स्कोफ़ील्ड, 2007)। उनका शोध शाही मनोरंजन और सांस्कृतिक कूटनीति के रूप में संगीत की भूमिका को दर्शाता है। इसी प्रकार, वेड (1998) इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं कि कैसे समन्वयात्मक आदान-प्रदान ने उत्तर भारत में संगीत के सौंदर्य और आध्यात्मिक आयामों को आकार दिया। भक्ति और सूफ़ी आंदोलनों ने विद्वानों का पर्याप्त ध्यान आकर्षित किया है। जॉन स्टैटन हॉली और वसुधा नारायणन (हॉली और जुएर्गेन्समेयर, 2004; नारायणन, 1994) ने कबीर, तुलसीदास और मीरा बाई जैसे संत-कवियों के संगीत योगदान पर प्रकाश डाला है। उनके भक्ति गीत, भजन, कीर्तन और अभंग के रूप में प्रस्तुत किए गए, सामाजिक पदानुक्रम और भाषाई विभाजन को पाटते थे। इस बीच, सूफी संगीत को रहस्यवाद और अंतरधार्मिक संवाद के लेंस के माध्यम से खोजा गया है। कुरैशी (1986) का कव्वाली पर नृवंशविज्ञान संबंधी कार्य सूफी दरगाहों में प्रदर्शन की भावनात्मक शक्ति को रेखांकित करता है। इंडो-इस्लामिक सांस्कृतिक संश्लेषण में अमीर खुसरो के योगदान पर अक्सर चर्चा की जाती है (शिमेल, 1975)। इसके अलावा, टी.एम. कृष्णा और एस.ए.के. दुर्गा ने दक्षिण भारतीय मंदिरों में कर्नाटक संगीत के विकास पर ध्यान केंद्रित किया है (सुब्रमण्यन, 2006)। इन मूल्यवान अध्ययनों के बावजूद, दरबारी, भक्ति और लोकप्रिय आयामों को एकीकृत करने वाले व्यापक संश्लेषण दुर्लभ हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES © 2024
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

(Peer Reviewed -Referred -Open Access Journal)

ISSN: 2945-3127
Vol. July 2024, Issue -1

Impact Factor: 4.12

3. अध्ययन का महत्व –

इस अध्ययन का महत्व मध्यकालीन भारत में संगीत के बहुआयामी कार्य की जाँच में निहित है, जो केवल एक कला रूप नहीं बल्कि एक परिवर्तनकारी सांस्कृतिक शक्ति है। यह अध्ययन धर्म, संस्कृति और राजनीति के साथ संगीत के अंतर्संबंध को स्पष्ट करता है, और एक विविध एवं स्तरीकृत समाज में सामूहिक पहचान को प्रभावित करने और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने की इसकी क्षमता पर बल देता है। हिंदुस्तानी और कर्नाटक परंपराओं का उदय, भक्ति और सूफी आंदोलनों का प्रभाव और महलों एवं मंदिरों के संरक्षण का महत्व संगीत की बहुमुखी प्रतिभा और एकीकरण क्षमता को दर्शाता है। इस परंपरा को समझने से भारत की सांस्कृतिक बहुलता की हमारी समझ बढ़ती है और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति, सामाजिक परिवर्तन और अंतर-सांस्कृतिक अंतक्रिया को बढ़ावा देने में संगीत की निरंतर भूमिका पर बल मिलता है।

4. अध्ययन पद्धति-

वर्तमान शोध में ऐतिहासिक शोध पद्धति और वर्णनात्मक शोध डिज़ाइन को अपनाया गया है।

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों (अनुवादित कृतियाँ), पत्रिकाओं, संपादित पुस्तकों,

ऑनलाइन स्रोतों, वेबसाइटों आदि पर आधारित है।

5. उद्देश्य-

➢ मध्यकालीन भारत में संगीत के सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक महत्व को समझने के लिए,

आध्यात्मिक अभिव्यक्ति और सांप्रदायिक एकता के माध्यम के रूप में केवल मनोरंजन से आगे बढ़कर इसके कार्य की जाँच करना आवश्यक है।

➢ संगीत के लोकतंत्रीकरण पर भक्ति और सूफी आंदोलनों के प्रभाव का परीक्षण करना।

➢ भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण पर मध्यकालीन भारतीय संगीत के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

6. चर्चा –

वर्तमान अध्ययन ने आगे की जाँच के लिए कई संभावित रास्तों पर ज़ोर दिया है। मध्यकालीन भारत में संगीत परंपराओं में क्षेत्रीय अंतरों पर किया गया अध्ययन गहन समझ के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। इस शोध में सामान्य रुझानों पर ध्यान दिया गया है, भविष्य के शोध बंगाल, कश्मीर और केरल जैसे क्षेत्रों के स्थानीय भक्ति संगीत पर केंद्रित हो सकते हैं, जहाँ बाउल गीत, सूफी समा संगीत और प्रारंभिक ईसाई भजन जैसी अनूठी शैलियाँ उत्पन्न हुईं। ऐसे क्षेत्रीय अध्ययन भारत की विविध और समन्वित संगीत विरासत की समझ को बढ़ाएँगे। मध्यकालीन भारतीय संगीत के विकास और प्रसार में महिलाओं की भूमिका आगे की खोज के लिए एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस तथ्य के बावजूद कि मीरा बाई जैसे उल्लेखनीय व्यक्तियों को मान्यता प्राप्त है, रचना, गायन और संरक्षण के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान की तुलनात्मक रूप से कम खोज की गई है। इसके अलावा, लिंग पर केंद्रित एक गहन अध्ययन इस समयावधि में संगीत के माध्यम से आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करने में महिलाओं की भूमिका की विस्मृत कहानियों पर प्रकाश डाल सकता है। इसके अलावा, शोध विभिन्न धर्मों के बीच तुलना की प्रासंगिकता पर जोर देता है। इस प्रकार, मध्यकाल में हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म और सिख धर्म के संगीतमय प्रस्तुतियों का विश्लेषण करके, भारत की विविध संस्कृति के संवर्धन में योगदान देने वाले परस्पर क्रिया, अनुकूलन और पारस्परिक प्रभाव के पैटर्न की खोज करना संभव है। अधिक विशिष्ट रूप से, भक्ति और सूफी परंपराओं द्वारा साझा किए गए संगीत घटक विस्तृत जांच की मांग करते हैं जिसमें ऐतिहासिक, संगीत संबंधी और धार्मिक दृष्टिकोण शामिल हों। मध्यकाल में संगीत वाद्ययंत्रों के विकास की जांच करना अच्छा होगा। मध्य एशियाई और फ़ारसी संस्कृति के प्रभाव के परिणामस्वरूप सितार, तबला और सारंगी जैसे वाद्य यंत्रों के विकास के तरीकों की समझ तकनीकी नवाचार और अंतर-सांस्कृतिक निषेचन की प्रक्रिया में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है। इसके अलावा, गुरु-शिष्य परंपरा और सूफी आध्यात्मिक सभाओं जैसी परंपराओं के माध्यम से संगीत के मौखिक प्रसारण के अध्ययन से उस युग में सूचना को संरक्षित करने के तरीकों की समझ में सुधार हो सकता है जब लिखित रिकॉर्डिंग का बहुत अधिक प्रचलन नहीं था। भविष्य के शोध अध्ययन संगीत प्रथाओं पर राजनीतिक बदलावों की भूमिका की जाँच कर सकते हैं। इसमें उन तरीकों का विश्लेषण शामिल होगा जिनसे दिल्ली सल्तनत से मुगल साम्राज्य, या क्षेत्रीय राज्यों से औपनिवेशिक नियंत्रण में संक्रमण ने संरक्षण, शैलीगत प्रगति और संगीतकारों की सामाजिक स्थिति को प्रभावित किया। मध्यकालीन भारतीय संस्कृति का अधिक गहन ज्ञान इस बात पर अधिक ज़ोर देने से बहुत लाभान्वित होगा कि भक्ति संगीत ने सामाजिक परिवर्तन, जातिगत संरचनाओं को उलटने, समावेशिता को बढ़ावा देने और सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने में किस प्रकार उत्प्रेरक का काम किया। इन अध्ययन पथों का अनुसरण करके, चाहे अकेले या साथ-साथ, इस बात की अच्छी संभावना है कि भारत के मध्यकालीन अतीत में संगीत और संस्कृति का इतिहास काफ़ी उन्नत होगा।

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES © 2024
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

(Peer Reviewed -Referred -Open Access Journal)

ISSN: 2945-3127
Vol. July 2024, Issue -1

Impact Factor: 4.12

7. निष्कर्ष –

भारत में मध्यकालीन काल में, संगीत केवल एक कलात्मक खोज से कहीं अधिक रहा है।साथ ही, इसने एक शक्तिशाली सांस्कृतिक सूत्र के रूप में भी काम किया जिसने विभिन्न जनजातियों, विश्वासों और परंपराओं को एक साथ लाया। संगीत के अधिक जटिल शास्त्रीय रूपों के विकास में महलों और मंदिरों के निर्माण ने सहायता की। भक्ति और सूफीवाद के माध्यम से आम लोगों को भक्ति संगीत से परिचित कराया गया। ग़ज़ल, कव्वाली, कीर्तन और भजन जैसे संगीत रूप ऐसी रचनाओं के उदाहरण हैं जो इतिहास में कायम रही हैं। स्थानीय प्रभावों और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के मिश्रण ने इन शैलियों के विकास को जन्म दिया। अमीर खुसरो, मीरा बाई, कबीर और तुलसीदास जैसी उल्लेखनीय ऐतिहासिक हस्तियों ने दिखाया है कि संगीत में विभिन्न संस्कृतियों, जातियों और भाषाओं के बीच की खाई को पाटने की क्षमता है। परिणामस्वरूप,उन्होंने संगीत का उपयोग न केवल व्यक्तिगत भक्ति के लिए, बल्कि सामाजिक सुधार के लिए भी किया है। इस अवधि के दौरान, संगीत ने एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य किया जिसने लोगों को एक साथ लाया और भारतीय संस्कृति की विविधता और गहराई की ओर ध्यान आकर्षित किया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि प्रदर्शन शाही महलों में हुआ या सौहार्द बढ़ाने के लिए गाँवों के समारोहों में; यह हमेशा ऐसा ही था। पूरे भारत के मध्यकालीन युग के दौरान, संगीत महत्वपूर्ण परिवर्तन और विकास के दौर से गुजरा। संस्कृति, राजनीति और धर्म के विभिन्न पहलुओं ने इन परिवर्तनों और प्रगति को आकार देने में भूमिका निभाई। इस अवधि में संरक्षण संरचनाएँ स्थापित हुईं, विशेष रूप से कई अलग-अलग राज्यों और दरबारों के अधीन। नई संगीत शैलियों का विकास, विभिन्न प्रकार की संगीत परंपराओं का समावेश और नए संगीत रूपों का आगमन एक ही समय में हुआ। शास्त्रीय संगीत और वर्तमान भारतीय लोक संगीत दोनों ही इस समयावधि के दौरान घटित घटनाओं से काफी प्रभावित हैं। इन घटनाओं का दोनों परंपराओं के विकास पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। मध्यकालीन भारत में प्रस्तुत भक्ति संगीत का उस काल में हुई सामाजिक क्रांति और आध्यात्मिकता पर गहरा प्रभाव पड़ा है। ईश्वर के साथ गहरा संबंध स्थापित करना, सामाजिक अन्याय की आलोचना और समावेशिता को बढ़ावा देना ही वे साधन हैं जिनके द्वारा इस उद्देश्य की प्राप्ति हुई है। ये सभी इस उत्प्रेरक के प्रत्यक्ष परिणाम हैं: समुदायों का एक साथ आना, विविध संस्कृतियों का मिश्रण और आध्यात्मिक ज्ञान का हस्तांतरण। पवित्र और अपवित्र, कुलीन और सांसारिक को एक साथ लाने की इसकी क्षमता के परिणामस्वरूप, इसे भारत में पूरे मध्यकालीन युग में प्रचलित संगीत विरासत के रूप में स्वीकार किया गया है। समय बीतने के बावजूद, इसका भारत के संगीत परिदृश्य पर प्रभाव जारी है और यह सांस्कृतिक पहचान के निर्माण की प्रक्रिया में राग और अर्थ के निरंतर महत्व की याद दिलाता है।

8. संदर्भ –

ब्राउन, आर. (2007). भारत का संगीत। ग्रीनवुड प्रेस, 45-68.
फैरेल, जी. (1997). भारतीय संगीत और पश्चिम। क्लेरेंडन प्रेस, 45-75.
हॉली, जे. एस., और जुएर्गेन्समेयर, एम. (2004). भारत के संतों के गीत। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 112-154.
कृष्णा, टी. एम. (2013). एक दक्षिणी संगीत: कर्नाटक कथा (पृष्ठ 160-200). हार्पर कॉलिन्स
नारायणन, वी. (1994). स्थानीय वेद: रहस्योद्घाटन, पाठ और अनुष्ठान (पृष्ठ 203-245).यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ कैरोलिना प्रेस.
कुरैशी, आर. बी. (1986). भारत और पाकिस्तान का सूफ़ी संगीत: कव्वाली में ध्वनि, संदर्भ और अर्थ (पृष्ठ 29-75)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
रोवेल, एल. (1992)। प्रारंभिक भारत में संगीत और संगीत संबंधी विचार (पृष्ठ 179-210)। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।
शिमेल, ए. (1975)। इस्लाम के रहस्यमय आयाम (पृष्ठ 190-223)। उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय प्रेस।
स्कोफ़ील्ड, के. (2007)। मुगल भारत में संगीत और संगीतकार: नए दृष्टिकोण (पृष्ठ 35-80)। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
सुब्रमण्यन, एल. (2006)। तंजौर दरबार से मद्रास संगीत अकादमी तक: दक्षिण भारत में संगीत का एक सामाजिक इतिहास (पृष्ठ 55-98)। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
वेड, बी. सी. (1998)। ध्वनि का चित्रण: मुगल भारत में संगीत, कला और संस्कृति का एक नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययन (पृष्ठ 60-110)। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES © 2024
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International